B - III
L - 24
MIH

राष्ट्रवाद के उदय के कारण

हितों का टकराव :-

- ब्रिटिश नीतियों के कारण भारतीय समाज के अलग-अलग वर्गों के हित प्रभावित हो रहे थे जैसे- किसान, कारीगर, श्रमिक, शिक्षित भारतीय, वकील, उद्योगपति इत्यादि। ब्रिटिश सरकार की नीतियाँ इन वर्गों के विकास में बाधक सिद्ध हो रही थी। औपनिवेशिक सत्ता से इनके हितों का टकराव राष्ट्रीय चेतना के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण बना।

आधुनिक शिक्षा का प्रसार :-

- आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ एक तरफ आधुनिक विचारों का प्रसार हुआ वहीं दूसरी तरफ शिक्षित भारतीयों की संख्या भी बढ़ी शिक्षा के अनुपात में रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं थे अतः ब्रिटिश नीतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रारम्भ हुआ और ब्रिटिश विरोधी भावना के उदय एवं प्रसार का महत्वपूर्ण कारण बना।
- आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा का भी प्रसार हुआ। राजनीतिक संगठनों राष्ट्रीय नेताओं के बीच यह सम्पर्क का

का माध्यम बना, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रति जागरूक रखने में भी अहम भूमिका रही। (आम लोगों के स्तर पर राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में इसकी कोई विशेष भूमिका नहीं थी)

इतिहास लेखन :-

- एक तरफ साम्राज्यवादी लेखन था जिसमें भारतीयों को शासन के अयोग्य माना गया वहीं दूसरी तरफ 19वीं सदी के उत्तरार्ध में एक राष्ट्रवादी लेखन का भी उभार हुआ इन लेखकों ने अतीत की उपलब्धियों से परिचय कराया जैसे- चन्द्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त इत्यादि शासकों की उपलब्धियाँ।
- राष्ट्रवादी लेखन ने भारतीयों में आत्म-विश्वास एवं आत्मगौरव के भाव को जागृत किया।

प्रेस की भूमिका :-

- राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में तथा लोगों को जागरूक करने में प्रेस की अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही अधिकांशतः राष्ट्रीय नेताओं का संबंध किसी न किसी अखबार से था। जैसे- दादा भाई नौरोजी - 'वायस आफ इंडिया'
सुब्रह्मण्यम अय्यर - 'द हिन्दू'

गोपालकृष्ण गोखले – 'सुधारक'
सुरेन्द्रनाथ बनर्जी – 'बंगाली'
तिलक – केसरी, मराठा.
इत्यादि।

- प्रेस के कारण भारतीय भाषाओं में पुस्तकों का प्रकाशन संभव हो पाया और इसने भी राष्ट्रीय चेतना को उभारने का कार्य किया जैसे – बंकिम चन्द्र, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इत्यादि की रचनाएँ।

भेदभाव की नीति :-

- अंग्रेजों के द्वारा प्रारम्भ से ही प्रशासन के सभी क्षेत्रों में भेदभाव एवं दुर्व्यवहार किया गया और नस्लीय आधार पर भारतीयों को अपमानित भी किया।
- भेदभाव की नीति के कारण राष्ट्रीय अपमान का भाव भी आकार लेने लगा।

लिटन (1876-80) एवं रिपन (1880-84)

लिटन :-

- लिटन एवं रिपन के काल में भारतीयों की कुछ नीतियों को लेकर आक्रोश।
- अकाल के बावजूद 1877 में दिल्ली दरबार का आयोजन।

- 1878 में सिविल सेवा में प्रवेश की उम्र घटाकर 19 वर्ष की गई।
- 1878 में शस्त्र अधिनियम के द्वारा अंग्रेजों को लाइसेंस के बिना भारत में शस्त्र रखने का अधिकार दिया गया।
- 1878 में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट के द्वारा भारतीय भाषाओं के अखबार पर कठोर प्रतिबंध लगाए गए। (इसे गला घोंटू अधिनियम भी कहते हैं)
- 1882 में इस अधिनियम को समाप्त कर दिया गया।

रिपन :-

- 1883-84 में इल्बर्ट बिल विवाद - इस कानून में भारतीय न्यायिक अधिकारियों को ग्रामीण क्षेत्रों में फौजदारी मामलों में अंग्रेजों को सजा देने का अधिकार दिया गया। लेकिन अंग्रेजों के विरोध के कारण बिल को अंग्रेजो के पक्ष में संशोधित किया गया।
- उपरोक्त घटनाओं ने शिक्षित भारतीयों को एक जुट होने के लिए प्रेरित किया और भारतीय अखबारों ने अखिल भारतीय संस्था के गठन की मांग की जाने लगी। इसी पृष्ठभूमि में दिसम्बर 1885 में भारतीय राष्ट्रीय

कांग्रेस की स्थापना हुई जिसे भारत में राष्ट्रीयता के उदय का एक सशक्त अभिव्यक्ति माना गया।

* अमृत बाजार पत्रिका - मोतीलाल घोष, शिशिर घोष

⇓

- बंग्ला भाषा से अंग्रेजी में प्रकाशन शुरू किया। (वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के प्रावधान से बचने हेतु)

कांग्रेस पूर्व राजनीतिक संस्थाये

(i) 1836 - बंगभाषा प्रकाशक सभा - गौरीशंकर
└ संस्थापक

(ii) 1837/38 - लैंड होल्डर्स सोसायटी - द्वारकानाथ टैगोर
└ जमींदारो के लिए

(iii) 1843 - ब्रिटिश इण्डिया सोसायटी आफ बंगाल - थामसन
└ आम लोगों के लिए

(iv) 1851 - ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन - राधाकांत देव
(संस्था न० 2, 3 का विलय करके)

(v) 1852 - बाम्बे एसोसिएशन - दादाभाई नौरोजी

(vi) 1852 - मद्रास नेटिव एसोसिएशन - गुजलु लक्ष्मी नरसु चेट्टी

नोट :-

1857 से पूर्व की स्थापित राजनीतिक संस्थाओं में क्षेत्रीयता के स्वर अधिक प्रबल थे 1857 के पश्चात के राजनीतिक संस्थाओं में क्षेत्रीयता क स्वर कमजोर हुआ और अधिक मुखर होकर अधिकारों की मांग की जाने लगी।

(vii) 1866 में लंदन में ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन - दादाभाई-नौरोजी, बदरूद्दीन तैयब जी, फिरोज शाह मेहता।

- भारत के अलग-अलग शहरों में इनकी शाखाएं थी।

(viii) 1870 में पूना सार्वजनिक सभा – रनाडे, जी.बी जोशी, एस.एस चिपलुणकर

(ix) 1876 - इंडियन एसोसिएशन - सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, आनंद मोहन बोस.

- शस्त्र अधिनियम, सिविल सेवा में उम्र तथा वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट के विरूद्ध राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया।
- 1883 और 1885 में कलकत्ता में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।
- 1883 में एक राष्ट्रीय कोष का गठन किया।
- कांग्रेस की पूर्ववर्ती संस्थाओं मे इसे सबसे महत्वपूर्ण संस्था माना गया है।

(x) 1884 में मद्रास महाजन सभा → वी. राघवाचारी, पी आनंद चार्लू

(xi) 1885 बाम्बे प्रेसिडेंसी एसोसिएशन – फिरोजशाह मेहता, – तैयब जी, – के.टी तेलंग

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

स्थापना - 1885 बाम्बे

संस्थापक - ए. ओ ह्यूम

(रिटायर्ड - ICS (आधिकारी)

थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य)

- 1884 में इण्डियन नेशनल यूनियन नामक संस्था बनाई और 1885 में पूना में इसकी बैठक करना चाहते थे लेकिन प्लेग के कारण बैठक आयोजित नही हो पाई तथा बाम्बे में बैठक आयोजित करना पड़ा।
  दादाभाई नौरोजी ने सुझाव पर यूनियन के स्थान पर इसे कांग्रेस कहा जाने लगा।
- प्रथम बैठक में यह निर्धारित हुआ कि प्रतिवर्ष भारत के अलग-अलग हिस्सों में इसकी बैठक होगी।

कांग्रेस की प्रथम चार बैठक

(i) बाम्बे - W.C बनर्जी

(ii) कलकत्ता - दादाभाई नौरोजी

(iii) मद्रास - बदरुद्दीन तैयब जी

(iv) इलाहाबाद - जार्ज यूल